

17-भाव सम्वेदनाओं की गंगोत्री

अध्याय 1: वेदव्यास की अन्तर्व्यथा

यह अध्याय महर्षि वेदव्यास की उस गहरी पीड़ा और चिंता का वर्णन करता है जो वे समाज और मानवता की नैतिक गिरावट को देखकर अनुभव कर रहे थे। वे अपनी व्यथा देवर्षि नारद से साझा करते हैं।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: मनीषी वेदव्यास कहाँ और किस हाल में बैठे थे?

उत्तर: मनीषी वेदव्यास सरस्वती नदी के तट पर अपने आश्रम के निकट विचारमग्न और व्यथित अवस्था में बैठे थे।

2. प्रश्न: वेदव्यास की विचार-शृंखला कैसे टूटी? नमस्ते। आपके द्वारा प्रदान किए गए पुस्तक "भाव संवेदनाओं की गंगोत्री" के अंशों के आधार पर प्रत्येक अध्याय से विभिन्न स्तरों के प्रश्न और उनके उत्तर यहाँ दिए गए हैं। इनका उद्देश्य विद्यार्थियों की समझ को बढ़ाना है।

अध्याय 1: वेदव्यास की अन्तर्व्यथा

यह अध्याय महर्षि वेदव्यास की उस गहरी पीड़ा और चिंता का वर्णन करता है जो वे समाज और मानवता की नैतिक गिरावट को देखकर अनुभव कर रहे थे। वे अपनी व्यथा देवर्षि नारद से साझा करते हैं।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: मनीषी वेदव्यास कहाँ और किस हाल में बैठे थे?

उत्तर: मनीषी वेदव्यास सरस्वती नदी के तट पर अपने आश्रम के निकट विचारमग्न और व्यथित अवस्था में बैठे थे।

2. प्रश्न: वेदव्यास की विचार-शृंखला कैसे टूटी?

उत्तर: आगंतुक, जो देवर्षि नारद थे, के कथन से वेदव्यास की विचार-शृंखला टूटी।

3. प्रश्न: वेदव्यास के अनुसार मनुष्य किस रोग से ग्रस्त है?

उत्तर: वेदव्यास के अनुसार, मनुष्य व्यक्ति और समाज के रूप में सन्निपात के रोग से ग्रस्त है, जिसमें वह कभी हँसता है, कभी कूदता है और कभी अहंकार में अकड़ा चलता है।

4. प्रश्न: वेदव्यास ने परिवारों की क्या दशा बताई?

उत्तर: वेदव्यास ने परिवारों की दशा को करुण बताते हुए कहा कि उनमें प्रेम मर गया है और केवल स्वार्थ सधने तक का मोह रह गया है। संतानें विवाह होते ही माता-पिता को छोड़ देती हैं।

5. प्रश्न: मानवता को राह दिखाने के लिए वेदव्यास ने सबसे पहला प्रयास क्या किया?

उत्तर: उन्होंने मानवीय बुद्धि के परिमार्जन हेतु वैदिक मंत्रों का पुनः वर्गीकरण किया और कर्मकाण्डों का स्वरूप सँवारा।

6. प्रश्न: पुराणों की रचना का मुख्य उद्देश्य क्या था?

उत्तर: पुराणों की रचना का उद्देश्य वेद में निहित सत्य और सद्बिचार को कथाओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाना था।

7. प्रश्न: महाभारत ग्रंथ की रचना क्यों की गई?

उत्तर: महाभारत की रचना मानवीय कुकृत्यों की वीभत्सता का चित्रण करने और सत्कर्मों की राह दिखाने के लिए की गई थी, ताकि बुद्धि अतीत से सीख सके।

8. प्रश्न: "ब्रह्मसूत्र" की रचना का क्या कारण था?

उत्तर: महाभारत के विस्तृत होने के कारण, वेदव्यास ने सरल सूत्रों में जीवन-जीने के आवश्यक तत्त्वों को सँजोने के लिए ब्रह्मसूत्र की रचना की।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: वेदव्यास के अनुसार मनुष्य और पशु में क्या भेद रह गया है और क्यों?

उत्तर: वेदव्यास के अनुसार, मनुष्य और पशु में भेद आचार-विचार की दृष्टि से नहीं, बल्कि केवल आकार-प्रकार की दृष्टि से रह गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि समाज में उठे को गिराना, गिरे को कुचलना और कुचले को मसलना ही रह गया है, जिससे मनुष्य पशु से भी बदतर हो गया है।

2. प्रश्न: देवर्षि नारद ने वेदव्यास की पीड़ा को "वैद्य को रोग" जैसा क्यों कहा?

उत्तर: देवर्षि ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि वेदव्यास स्वयं एक महान मनीषी और पीड़ा-निवारक थे, जो दूसरों को मार्ग दिखाते थे। जब वे स्वयं व्यथित थे, तो यह स्थिति वैसी ही विचित्र थी जैसे किसी वैद्य को स्वयं रोग हो जाए या पीड़ा-निवारक स्वयं पीड़ा में हो। वेदव्यास ने इसे विवशता बताया, जैसे एक वैद्य रोगी को ठीक न कर पाने पर व्यथित होता है।

3. प्रश्न: वेदव्यास के अनुसार, उनके सभी प्रयास (वेद वर्गीकरण, पुराण रचना, महाभारत, ब्रह्मसूत्र) क्यों पूरी तरह सफल नहीं हुए?

उत्तर: उनके प्रयास इसलिए पूरी तरह सफल नहीं हुए क्योंकि लोग उनके सार को समझने के बजाय बाहरी कलेवर से चिपक गए। वेदों को पूजा की वस्तु बना दिया गया, पुराण और स्मृतियाँ जीविकोपार्जन का साधन बन गईं, और ब्रह्मसूत्र पर पण्डिताभिमानी शास्त्रार्थ करने लगे। लोगों की बुद्धि सुधरी नहीं और अहं गया नहीं, जिसका परिणाम महाभारत के युद्ध के रूप में सामने आया।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: वेदव्यास की अन्तर्व्यथा का मूल कारण क्या था—उनके प्रयासों की असफलता या कुछ और? विस्तार से समझाएँ।

उत्तर: वेदव्यास की अन्तर्व्यथा का मूल कारण उनके प्रयासों की असफलता नहीं थी, बल्कि मानव की दुर्दशा और दुर्मति-जन्य दुर्गति थी, जो उनसे देखी नहीं जा रही थी। वे कहते हैं कि एक मनीषी का कर्तव्य अंतिम साँस तक प्रयास करते रहना है और वे इससे विरत नहीं हुए। उनकी असह्य बेचैनी इस बात को लेकर थी कि इतने प्रयासों के बावजूद मानवता पतन की ओर जा रही है और उन्हें इससे बाहर निकलने का कोई मार्ग नहीं सूझ रहा था। यह उनकी व्यक्तिगत विफलता का दुःख नहीं, बल्कि मानवता के प्रति गहरी करुणा और चिंता थी।

2. प्रश्न: वेदव्यास के कथन "विज्ञान, धन का गुलाम और धन दुर्बुद्धि के हाथ की कठपुतली" का महाभारत के युद्ध के संदर्भ में क्या तात्पर्य है?

उत्तर: इस कथन का तात्पर्य यह है कि महाभारत काल में ज्ञान और शक्ति (विज्ञान) का उपयोग धन और सत्ता प्राप्त करने के लिए किया जा रहा था। यह धन और सत्ता उन लोगों के हाथ में थी जिनकी बुद्धि भ्रष्ट (दुर्बुद्धि) थी, जैसे दुर्योधन। परिणामस्वरूप, सारे ज्ञानी, विद्वान और बलवान लोग भी, जो स्वयं को बुद्धिमान समझते थे, अंततः दुर्बुद्धि के दास सिद्ध हुए और उन्होंने अपने ज्ञान और संसाधनों का उपयोग विनाश के लिए किया। इससे देश और समाज का वैभव चकनाचूर हो गया। यह दिखाता है कि कैसे भाव-संवेदना के अभाव में बुद्धि और संसाधन विनाशकारी बन जाते हैं।

अध्याय 2: देवर्षि का सत्परामर्श

इस अध्याय में देवर्षि नारद, महर्षि व्यास की अन्तर्व्यथा का समाधान बताते हैं, जो है- भाव-सम्वेदनाओं का जागरण।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: देवर्षि ने वेदव्यास की समस्या का क्या समाधान बताया?

उत्तर: देवर्षि ने समाधान के रूप में भाव-सम्वेदनाओं का जागरण बताया, जिसे उन्होंने सोई हुई आत्मा का जागरण भी कहा।

2. प्रश्न: देवर्षि के अनुसार मानवीय सत्ता का केंद्र क्या है?

उत्तर: देवर्षि के अनुसार, मानवीय सत्ता का केंद्र आत्मा है।

3. प्रश्न: भावों का पहला प्रहार किस पर होता है?

उत्तर: भावों के जागते ही उनका पहला प्रहार अहंकार पर होता है।

4. प्रश्न: भावों को किन दो चीजों से नियंत्रित करने की आवश्यकता है?

उत्तर: भावों के अमृत को सद्विचारों के पात्रों में सँजोने और विवेक की छत्री से छानने की आवश्यकता है।

5. प्रश्न: मूर्छित मानवता रूपी लक्ष्मण के लिए संजीवनी क्या है?

उत्तर: मूर्छित मानवता रूपी लक्ष्मण के लिए भाव-सम्वेदना ही संजीवनी है।

6. प्रश्न: देवर्षि ने वेदव्यास के साथ किसे जुटने के लिए कहा?

उत्तर: उन्होंने वेदव्यास के साथ उनके शिष्य परिकर को जुटने के लिए कहा, ताकि वे व्यास द्वारा रचित संजीवनी को जन-जन तक पहुँचा सकें।

7. प्रश्न: देवर्षि से समाधान पाकर वेदव्यास क्या करने में जुट गए?

उत्तर: वेदव्यास युग की भागवत रचने और अपने शिष्यों द्वारा उसे जन-जन तक पहुँचाने के कार्य में जुट गए।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: देवर्षि ने भावों को "एक साथ कोमल और कठोर दोनों" क्यों कहा है?

उत्तर: देवर्षि के अनुसार, भाव सत्प्रवृत्तियों के लिए पुष्प जैसे कोमल होते हैं, जो उनमें सुगंध भरते हैं। वहीं, दुष्प्रवृत्तियों के लिए वे वज्र की तरह कठोर होते हैं, जो एक ही आघात में उन्हें नष्ट कर देते हैं। इसीलिए वे एक साथ कोमल और कठोर हैं।

2. प्रश्न: भाव-सम्वेदनाओं का जागरण मन और बुद्धि को कैसे नियंत्रित करता है?

उत्तर: जब भाव-सम्वेदनाएँ या आत्मा जागृत होती है, तो वह अहंकार को तोड़ देती है। अहंकार के टूटते ही मन और बुद्धि आत्मा के अनुगामी बन जाते हैं। तब मन उन्नत कल्पनाएँ करता है और बुद्धि हितकारक समाधान सोचती है। इस प्रकार, भाव-सम्वेदना मन और बुद्धि को कुमार्ग से निकालकर सन्मार्ग पर लगा देती है।

3. प्रश्न: देवर्षि के अनुसार, भाव-चेतना के जागरण से मनुष्य क्या सिद्ध कर सकता है?

उत्तर: भाव-चेतना का जागरण होते ही मनुष्य यह सिद्ध कर सकता है कि वह ईश्वर का पुत्र है और दिव्य जीवन जीने में सक्षम है। वह यह भी सिद्ध कर सकता है कि वह धरती का देवता है और इस धरती को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ (स्वर्गादपि गरीयसी) बना सकता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: देवर्षि ने वेदव्यास को "मानव जीवन की विकृति को पहचाना, अब प्रकृति को और गहराई से पहचानिए" क्यों कहा? इसका गूढ़ अर्थ क्या है?

उत्तर: इसका गूढ़ अर्थ यह है कि वेदव्यास ने अब तक समस्या के बाहरी लक्षणों (विकृति) पर ध्यान केंद्रित किया था, जैसे- सामाजिक पतन, अहंकार, और स्वार्थ। उन्होंने बुद्धि के स्तर पर समाधान खोजने की कोशिश की, जो असफल रही। देवर्षि उन्हें समस्या की जड़, यानी मनुष्य की मूल प्रकृति को समझने के लिए कह रहे हैं। मनुष्य की प्रकृति यह है कि उसके सारे क्रियाकलाप अहं-जन्य हैं और बुद्धि-मन उसके गुलाम हैं। सत्ता का असली केंद्र आत्मा है। इसलिए, समाधान बुद्धि के परिमार्जन में नहीं, बल्कि आत्मा (भाव-सम्वेदना) को जगाने में है, जो अहंकार को नष्ट कर बुद्धि और मन को सही दिशा दे सकती है। यह सतह से हटकर मूल कारण पर काम करने का परामर्श था।

2. प्रश्न: श्लोक "नत्वहं कामये राज्यम्..." के माध्यम से देवर्षि किस प्रकार की भाव-चेतना जगाने की बात कर रहे हैं?

उत्तर: इस श्लोक का अर्थ है- "न मैं राज्य की कामना करता हूँ, न सुख की और न ही मोक्ष की। मैं तो केवल दुःख से संतप्त प्राणियों की पीड़ा का नाश करना चाहता हूँ।" इस श्लोक के माध्यम से देवर्षि एक ऐसी भाव-चेतना जगाने की बात कर रहे हैं जो निस्वार्थ लोक-कल्याण और करुणा पर आधारित हो। यह चेतना व्यक्तिगत लाभ, सुख या मोक्ष जैसी कामनाओं से ऊपर उठकर दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझने और उसे दूर करने के लिए सक्रिय होने की प्रेरणा देती है। यह भाव-चेतना ही व्यक्ति को आत्म-केंद्रित होने से रोककर उसे "सर्वजन हिताय" के लिए कर्मोन्मुख बनाती है।

अध्याय 3: अन्तर्दृष्टि जागी—चैतन्य हो गए

यह अध्याय विश्वम्भर मिश्र (निमाई) के जीवन की उस घटना का वर्णन करता है जब एक संत से मिलने के बाद उनकी अन्तर्दृष्टि जागी और वे अपने पाण्डित्य के अहंकार को छोड़कर भाव-श्रद्धा के मार्ग पर चल पड़े और 'चैतन्य' कहलाए।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: विश्वम्भर मिश्र कहाँ आए हुए थे और वे किस नाम से प्रसिद्ध थे?

उत्तर: विश्वम्भर मिश्र गयाधाम आए हुए थे और वे नवद्वीप के 'निमाई' के नाम से प्रसिद्ध थे, जिनका पाण्डित्य पूरा बंगाल मानता था।

2. प्रश्न: संत ईश्वरपुरी ने निमाई की प्रतिभा के बारे में क्या सोचा?

उत्तर: उन्होंने सोचा कि यदि निमाई की प्रतिभा भाव-श्रद्धा के साथ जुड़ जाए, तो वह लोगों का जीवन सँवारने के साथ-साथ अनेकों को राह दिखा सकेगा।

3. प्रश्न: संत ईश्वरपुरी ने निमाई से क्या जिज्ञासा प्रकट की?

उत्तर: उन्होंने निमाई से पूछा, "क्या सचमुच आप शास्त्र का अर्थ जानते हैं?" और स्पष्ट किया कि क्या उनकी व्याख्याएँ केवल बुद्धि-कौशल हैं या उनके साथ अनुभूतियाँ भी जुड़ी हैं।

4. प्रश्न: संत के अनुसार, भाव-चेतना के बिना जीवित मनुष्य किसकी तरह है?

उत्तर: संत के अनुसार, भाव-चेतना के बिना जीवित मनुष्य एक लाश (मूर्दे) की तरह है, जो स्वयं सड़ता है और वातावरण को घिनौना बनाता है।

5. प्रश्न: निमाई ने गुरु-चरणों की धूल मस्तक पर लगाकर क्या कहा?

उत्तर: उन्होंने कहा, "आज शास्त्रों का मर्म पता चला। अब तक मैं मुरदा था, आपने मुझे चैतन्य बना दिया"।

6. प्रश्न: नदिया लौटकर चैतन्य ने सबसे पहला सेवा-कार्य क्या किया?

उत्तर: उन्होंने रास्ते में मिले एक उपेक्षित कोढ़ी को उठाया, उसके घाव धोए और औषधि लगाई।

7. प्रश्न: चैतन्य ने मुर्दों में प्राण-संचार करने के लिए क्या करना शुरू किया?

उत्तर: उन्होंने सेवा-कार्य के साथ-साथ संकीर्तन-मण्डल गठित करने शुरू किए।

8. प्रश्न: लेखक के अनुसार, 'मनुष्य' और 'भूत-पलीत' में क्या अंतर है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, मनुष्य वह है जो मनुष्य के लिए मरे। जबकि जो सारा जीवन ईंट-पत्थर और कागज बटोरते हुए मरते हैं, वे भूत-पलीत हैं, जो दूसरों को डराते-भगाते हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: संत ईश्वरपुरी ने निमाई के पाण्डित्य को उस समय की "विडम्बना" क्यों कहा?

उत्तर: संत ने इसे विडम्बना इसलिए कहा क्योंकि उस समय देश विदेशी आक्रांताओं (गौरी, गजनी, बख्तियार) के अत्याचारों से कुचला जा रहा था और मनुष्य का आत्मविश्वास खो चुका था। ऐसे गंभीर समय में भी निमाई जैसी प्रतिभा केवल वाक्-कौशल (शास्त्रार्थ) में व्यस्त थी, जबकि उसे समाज की पीड़ा दूर करने और लोगों में आत्मविश्वास जगाने के लिए काम करना चाहिए था। प्रतिभा का गलत जगह उपयोग एक विडम्बना ही थी।

2. प्रश्न: "गरम लोहे को ठण्डा लोहा काटता है"—इस उदाहरण के माध्यम से संत क्या समझाना चाहते थे?

उत्तर: इस उदाहरण के माध्यम से संत यह समझाना चाहते थे कि समस्याओं का समाधान उसी प्रकृति का होना चाहिए, पर विपरीत गुण वाला। उन्होंने दुर्बुद्धि को दाहक-तप्त (गरम) लोहा कहा और भाव-श्रद्धा को शीतल (ठण्डा) लोहा बताया, जो उस तप्त लोहे को परिमार्जित, सुडौल और काम लायक बना सकता है। अतः बुद्धि की समस्या का समाधान केवल बुद्धि से नहीं, बल्कि भाव-युक्त शीतल बुद्धि से ही संभव है।

3. प्रश्न: चैतन्य महाप्रभु के जीवन में "अन्तर्दृष्टि" जागने का वास्तविक अर्थ क्या था?

उत्तर: उनके जीवन में अन्तर्दृष्टि जागने का वास्तविक अर्थ यह समझना था कि सभी समस्याओं की जड़ निष्ठुरता है। उन्हें यह बोध हुआ कि सच्चा ज्ञान केवल बौद्धिक कौशल या शास्त्रार्थ जीतना नहीं है, बल्कि मानवता की पीड़ा को महसूस करना और उसे दूर करने के लिए भाव-श्रद्धा के साथ सक्रिय होना है। यह अहंकार से करुणा की ओर, और बुद्धि-विलास से सेवा की ओर एक आमूलचूल परिवर्तन था।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: संत ईश्वरपुरी के अनुसार, प्रतिभा जब भाव-श्रद्धा से नहीं जुड़ती तो वह क्या करती है और जुड़ने पर क्या होता है? इस कथन का चैतन्य के जीवन से क्या संबंध है?

उत्तर: संत के अनुसार, भाव-श्रद्धा से न जुड़ पाने के कारण प्रतिभा अहंकार की चाकरी करती है। उसका एकमात्र लक्ष्य विलासिता और वैभव के साधन जुटाना और किसी भी तरह अहंकार का झंडा ऊँचा रखना होता है। इसके विपरीत, जब प्रतिभा उन्नत भावों से जुड़ जाती है, तो व्यक्ति के अन्दर की तड़पन और बेचैनी उसे "सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय" हेतु क्रियाशील होने के लिए विवश करती है। यह कथन चैतन्य के जीवन से सीधे संबंधित है। संत से मिलने से पहले उनकी प्रतिभा अहंकार की चाकरी कर रही थी (पाण्डित्य का प्रदर्शन, शास्त्रार्थ में जीत)। संत के सत्परामर्श से जब उनकी प्रतिभा भाव-श्रद्धा से जुड़ी, तो वे समाज की पीड़ा दूर करने के लिए सक्रिय हो गए (कोढ़ी की सेवा, संकीर्तन)।

2. प्रश्न: अध्याय के अंत में लेखक ने सम्वेदनहीन और सम्वेदनशील लोगों की तुलना प्रेतों और जीते-जागते आदमियों से क्यों की है? इस तुलना का गहरा दार्शनिक अर्थ क्या है?

उत्तर: लेखक ने यह तुलना इसलिए की है क्योंकि सम्वेदनहीन व्यक्ति बाहरी रूप से जीवित होते हुए भी आंतरिक रूप से मृत (प्रेत) के समान होता है। जैसे प्रेत या मुर्दे को पास बैठे लोगों का विलाप या कष्ट महसूस नहीं होता, वैसे ही सम्वेदनहीन व्यक्ति को दूसरों की पीड़ा दिखाई या सुनाई नहीं देती। वे केवल अपने स्वार्थ के लिए जीते हैं। इसके विपरीत,

सम्वेदनशील व्यक्ति ही वास्तव में 'जीता-जागता' है, क्योंकि जीवन का चिह्न ही चेतना और दूसरों के सुख-दुःख को महसूस करने की क्षमता है। इसका गहरा दार्शनिक अर्थ यह है कि जैविक रूप से जीवित होना ही 'जीवन' नहीं है; सच्चा जीवन भाव-सम्वेदना के साथ जीने में है। सम्वेदनशीलता ही मनुष्य को मनुष्य बनाती है, अन्यथा वह एक चलता-फिरता शव मात्र है।

अध्याय 4: जगी सम्वेदना ने नारी-चेतना को झकझोरा

यह अध्याय चित्तौड़ की राजरानी मीरा के बारे में है, जिन्होंने सामाजिक बंधनों और राजसी वैभव को त्यागकर नारी-चेतना को जगाने और अपनी करुणा का विस्तार करने का मार्ग चुना।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: मीरा कौन थीं और उनके पास क्या सब कुछ था?

उत्तर: मीरा चित्तौड़ की राजरानी थीं और उनके पास वैभव, पद, अधिकार, और सम्मान सब कुछ था।

2. प्रश्न: राज-परिवार मीरा को किस बात की छूट नहीं दे रहा था?

उत्तर: राज-परिवार उन्हें जनक्रांति का बीज बोने और नारी चेतना को जगाने के लिए प्रकाश-दीप बनने की छूट नहीं दे रहा था।

3. प्रश्न: मीरा के अनुसार, "घायल की गति घायल" ही क्यों जान सकता है?

उत्तर: क्योंकि जो पीड़ा स्वयं किसी ने सही हो, उसकी गहराई को केवल वही समझ सकता है। मीरा समाज के बंधनों से स्वयं पीड़ित थीं, इसलिए वे दूसरों की पीड़ा को गहराई से महसूस करती थीं।

4. प्रश्न: मीरा ने महलों को क्यों टुकड़ा दिया?

उत्तर: उन्होंने अपनी करुणा और दूसरों की पीड़ा के कारण महलों को टुकड़ा दिया और लोगों में प्राण-संचार करने के लिए भावों की संजीवनी लेकर बाहर निकल पड़ीं।

5. प्रश्न: राजस्थान की एक महिला केसर बाई ने मीरा से क्या पूछा?

उत्तर: केसर बाई ने पूछा, "बहन यह पुरुषों का काम क्यों कर रही हैं?"।

6. प्रश्न: मीरा ने नारी को भाव-श्रद्धा के लिए अधिक उपयुक्त क्यों बताया?

उत्तर: क्योंकि नारी में भाव-श्रद्धा की सघनता होती है, देने की प्रवृत्ति होती है, और वह परहित में स्वार्थों को स्वाभाविक रूप से त्याग देती है, जैसे वह प्राण देकर बालक को तैयार करती है।

7. प्रश्न: मीरा को मारने के लिए क्या-क्या षड्यंत्र रचे गए?

उत्तर: उन्हें मारने के लिए साँप की पिटारी और जहर का प्याला जैसे षड्यंत्र रचे गए।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने प्रेतों और मनुष्यों की बातों को "उलटी" क्यों कहा है? मीरा के जीवन में यह कैसे सिद्ध हुआ?

उत्तर: लेखक के अनुसार, प्रेतों (सम्वेदनहीन लोगों) को अँधेरा और दूसरों को परेशान करना अच्छा लगता है, जबकि मनुष्यों (सम्वेदनशील लोगों) को उजाला और सहयोग करना भाता है। मीरा के जीवन में यह सिद्ध हुआ क्योंकि उनका राज-परिवार (प्रेत समान) उन्हें झूठी मर्यादाओं के अँधेरे में कैद रखना चाहता था, जबकि मीरा (मनुष्य समान) नारी-चेतना का उजाला फैलाना चाहती थीं। यह सोच का एक-दूसरे से पूरी तरह उलटा होना था।

2. प्रश्न: करुणा के उभरने की सबसे बड़ी पहचान क्या है? मीरा के जीवन में यह कैसे दिखाई दी?

उत्तर: करुणा के उभरने की एक ही पहचान है: अपनी आवश्यकताएँ भूल जाना और दूसरों की जरूरतें याद आना। मीरा के जीवन में यह स्पष्ट दिखाई दिया जब उन्होंने अपने राजसी सुख, वैभव और आराम को भुला दिया और समाज में,

विशेषकर नारी जाति के दुःख-दर्द को अपना बना लिया। उनका महलों को त्यागना इसी पहचान का प्रतीक था।

3. प्रश्न: "प्रश्न यह नहीं है कि मीरा को सफलता कितनी मिली?"—इस वाक्य का क्या आशय है?

उत्तर: इस वाक्य का आशय यह है कि किसी महान कार्य में बाहरी या भौतिक सफलता का महत्व कम होता है। असली सफलता तो अन्दर पीड़ा और पतन के बंधनों को तोड़ने के लिए बेचैनी का उठना और क्रियाशीलता की ओर कदम बढ़ाना है। मीरा का बंधनों को तोड़कर बाहर निकलना ही अपने आप में एक इतनी बड़ी सफलता है जिस पर हजारों भौतिक सफलताएँ न्योछावर की जा सकती हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: मीरा के जीवन का संघर्ष केवल एक व्यक्तिगत संघर्ष नहीं, बल्कि दो विचारधाराओं का संघर्ष था। कैसे?

उत्तर: मीरा का संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं था। यह दो विचारधाराओं के बीच एक गहरा संघर्ष था। एक तरफ झूठी मर्यादाओं, प्रथा-प्रचलनों और आत्म-केंद्रित राजसी वैभव की विचारधारा थी, जिसका प्रतिनिधित्व उनका राज-परिवार कर रहा था। यह विचारधारा व्यक्ति की आत्मा का गला घोटती थी। दूसरी तरफ जाग्रत सम्वेदना, करुणा, नारी-चेतना और जन-कल्याण की विचारधारा थी, जिसका प्रतिनिधित्व मीरा कर रही थीं। उनका संघर्ष यह सिद्ध करने के लिए था कि सच्ची मानवता राजसी दीवारों में कैद रहने में नहीं, बल्कि बाहर निकलकर दूसरों के आँसू पोंछने में है। इसलिए, यह व्यक्ति बनाम परिवार नहीं, बल्कि जड़ता बनाम चेतना का संघर्ष था।

2. प्रश्न: मीरा ने नारी को ही भाव-श्रद्धा का स्वाभाविक वाहक क्यों माना? इसके सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारण क्या हो सकते हैं?

उत्तर: मीरा ने नारी को भाव-श्रद्धा का स्वाभाविक वाहक माना क्योंकि उसमें देने की प्रवृत्ति, कष्ट सहकर परिवार को संगठित रखने की क्षमता और परहित में स्वार्थ त्यागने का गुण स्वाभाविक रूप से होता है। इसके सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारण हैं:

◦ मनोवैज्ञानिक कारण: मातृत्व की भावना नारी को स्वाभाविक रूप से करुणामयी और त्यागमयी बनाती है। वह प्राण देकर एक जीवन का सृजन और पोषण करती है, जो समर्पण का सर्वोच्च रूप है।

◦ सामाजिक कारण: सामाजिक संरचना में नारी को परिवार की धुरी माना गया है, जो सबको जोड़कर रखती है। यह भूमिका उसे अधिक सहनशील और दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील बनाती है। मीरा इसी स्वाभाविक गुण को परिवार की सीमाओं से निकालकर पूरे समाज तक व्यापक बनाने की बात कर रही थीं।

अध्याय: सक्रिय समर्पण कैसा हो?

यह अध्याय नवयुवती आंडाल के माध्यम से समर्पण की सच्ची व्याख्या करता है, जो निष्क्रिय पूजा-पाठ नहीं, बल्कि विश्व-उद्यान को सुंदर बनाने के लिए मन, वचन और कर्म से सक्रिय होना है।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: नवयुवती आंडाल ने विवाह करने से क्यों मना कर दिया?

उत्तर: उसने कहा कि जब भगवान का घर (संसार) ही उजड़ रहा है, तो नया घर बसाना मूर्खता है। हमें उजड़ रहे घरों को ही बसाना चाहिए।

2. प्रश्न: आंडाल ने किसे अपना एकमात्र पति घोषित किया?

उत्तर: उसने भगवान को ही अपना एकमात्र पति घोषित कर दिया।

3. प्रश्न: आंडाल के अनुसार सच्ची भक्ति क्या है?

उत्तर: उनके अनुसार, संसार परमात्मा का विराट स्वरूप है। हर किसी के अन्दर आत्मा के रूप में परमात्मा विद्यमान है।

इसी आत्म-चेतना को जगाना और भाव-धन को अर्पित करना ही सच्ची भक्ति है।

4. प्रश्न: समर्पण की क्रिया कब शुरू हुई समझनी चाहिए?

उत्तर: जब आत्मचेतना की सघन भावनाएँ, मन की सारी सोच और शरीर की हर हरकत विश्व-उद्यान को सुखद-सुंदर बनाने के लिए मचल उठे, तब समझना चाहिए कि समर्पण की क्रिया शुरू हुई।

5. प्रश्न: आंडाल के अनुसार, सच्चा भक्त कौन है और विभक्त कौन है?

उत्तर: भक्त वही है जिसके लिए जन-जन का दर्द उसका अपना दर्द हो। अन्यथा वह विभक्त है, यानी भगवान से पूरी तरह अलग-थलग है।

6. प्रश्न: आंडाल ने 'शांति' की क्या व्याख्या की?

उत्तर: उन्होंने बताया कि जिसे शांति कहते हैं, वह क्रियाशीलता की चरम-अवस्था है। जैसे लड्डू जब पूरी तेजी से घूमता है, तब वह शांत और स्थिर दिखाई देता है।

7. प्रश्न: आंडाल लोगों से क्या कहती थीं?

उत्तर: वह कहती थीं, "क्षीर सागर तुम्हारे अपने अन्दर है। इस शेषशायी (भगवान) को झकझोरकर उठाओ, फिर देखो, तुम्हारा अपना घर बैकुण्ठ हो जाएगा"।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: आंडाल ने अपने परिवार के 'घर बसाने' के तर्क का खंडन कैसे किया? इसमें क्या गहरा संदेश छिपा है?

उत्तर: आंडाल ने यह कहकर तर्क का खंडन किया कि जब पूरा समाज और संसार (भगवान का घर) उजड़ रहा है, तो अपना एक छोटा-सा व्यक्तिगत घर बसाने की सोचना स्वार्थ और मूर्खता है। इसमें गहरा संदेश यह है कि व्यक्तिगत सुख और स्वार्थ सामाजिक कल्याण से बड़े नहीं हो सकते। हमारा पहला कर्तव्य उस बड़े घर (समाज) को संवारना है जिसके हम हिस्से हैं।

2. प्रश्न: आंडाल ने "निष्क्रिय समर्पण" की धारणा को कैसे चुनौती दी? उनके अनुसार "सक्रिय समर्पण" क्या है?

उत्तर: उस समय समर्पण का अर्थ घर में बैठकर पूजा-पाठ करना माना जाता था। आंडाल ने इस निष्क्रिय धारणा को चुनौती दी। उनके अनुसार, "सक्रिय समर्पण" का अर्थ है अपनी पूरी चेतना, सोच और शारीरिक क्षमता को संसार को बेहतर बनाने के लिए लगा देना। यह केवल भावना नहीं, बल्कि कर्म है। उन्होंने अलवारों की टोली लेकर समाज में चेतना जगाने का कार्य करके इसे सिद्ध भी किया।

3. प्रश्न: भगवान के "घायल गीध को गोद में उठाने" के उदाहरण से आंडाल क्या सिद्ध करना चाहती थीं?

उत्तर: इस उदाहरण से आंडाल यह सिद्ध करना चाहती थीं कि यदि स्वयं भगवान दूसरों की पीड़ा से द्रवित होकर उनकी सहायता के लिए दौड़ पड़ते हैं, तो उनका भक्त कहलाने वाले व्यक्ति के मन में पर-पीड़ा की अनुभूति कैसे नहीं हो सकती? यदि किसी में दूसरों के प्रति करुणा नहीं है, तो उसका भक्त होने का दावा झूठा है। भक्ति का अर्थ ही है- करुणा और सेवा।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "क्षीर सागर तुम्हारे अपने अन्दर है। इस शेषशायी को झकझोरकर उठाओ।"—इस कथन का आध्यात्मिक और व्यावहारिक अर्थ क्या है?

उत्तर:

◦ आध्यात्मिक अर्थ: इसका अर्थ है कि दिव्यता, शांति और आनंद का स्रोत (क्षीर सागर) कहीं बाहर नहीं, बल्कि हमारे स्वयं के भीतर है। हमारे अंदर की आत्मा (शेषशायी विष्णु) सुप्त अवस्था में है। उसे जगाने की आवश्यकता है। आत्म-जागरण से ही जीवन में दिव्यता और वैकुण्ठ का अनुभव हो सकता है।

◦ व्यावहारिक अर्थ: इसका मतलब है कि हर व्यक्ति के अंदर समाज का कल्याण करने की अपार क्षमता और संवेदनाएँ (दिव्य-भाव) सोई हुई हैं। हमें उन सोई हुई क्षमताओं को जगाकर सक्रिय करना होगा। जब हम अपनी आंतरिक शक्तियों को जगाकर लोक-कल्याण में लगते हैं, तो हमारा जीवन और आसपास का वातावरण स्वतः ही स्वर्ग जैसा सुंदर बन जाता है।

2. प्रश्न: आंडाल के अनुसार, शांति और क्रियाशीलता में क्या संबंध है? यह विचार पारंपरिक 'शांति' की धारणा से कैसे भिन्न है?

उत्तर: पारंपरिक रूप से 'शांति' को अक्सर निष्क्रियता, एकांत या संसार से पलायन से जोड़ा जाता है। लेकिन आंडाल के अनुसार, सच्ची शांति क्रियाशीलता की चरम अवस्था है। उन्होंने लड्डू का उदाहरण दिया, जो पूरी गति से घूमने पर स्थिर प्रतीत होता है। यह विचार पारंपरिक धारणा से बिल्कुल भिन्न है। इसका अर्थ है कि जब कोई व्यक्ति अपने लक्ष्य (जैसे लोक-सेवा) में पूरी तरह से, बिना किसी भटकाव या स्वार्थ के, अपनी पूरी ऊर्जा के साथ लग जाता है, तो उसका मन बाहरी उथल-पुथल के बावजूद आंतरिक रूप से शांत और स्थिर हो जाता है। अतः शांति, कर्म से भागना नहीं, बल्कि कर्म में पूरी तरह रम जाना है।

अध्याय: संकल्प जागा तो निष्ठुर भी बदला

यह अध्याय सम्राट अशोक के जीवन के उस चमत्कारी क्षण का वर्णन करता है जब कलिंग युद्ध के विनाश को देखकर उनका हृदय परिवर्तन हुआ और वे 'चण्ड-अशोक' से 'अशोक महान' बन गए।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अशोक कलिंग विजय के बाद क्या मना रहे थे?

उत्तर: वे अपनी विजय के पश्चात् उल्लास का पर्व मना रहे थे।

2. प्रश्न: युद्धबंदी के रूप में अशोक के सामने किसे लाया गया?

उत्तर: एक लंगड़े, झुर्रीदार चेहरे वाले बूढ़े को युद्धबंदी के रूप में लाया गया।

3. प्रश्न: बूढ़े ने अशोक की विजय को 'वीरता' न कहकर 'क्रूरता' क्यों कहा?

उत्तर: क्योंकि बूढ़े के अनुसार, वीर वे होते हैं जो दूसरों के कष्ट हरते हैं, न कि वे जो लाशों के ढेर पर खुश होते हैं। लाशों को देखकर तो कुत्ते, गिद्ध और सियार भी खुश होते हैं, पर उन्हें वीर नहीं कहा जाता।

4. प्रश्न: बूढ़े की मृत्यु का क्या कारण था?

उत्तर: राजवैद्य के अनुसार, असह्य मानसिक पीड़ा का आघात सहन न कर पाने के कारण उसकी मृत्यु हुई।

5. प्रश्न: युद्ध-भूमि का दृश्य देखकर अशोक को क्या महसूस हुआ?

उत्तर: लाशों के ढेर, जिन्हें कुत्ते-गिद्ध घसीट रहे थे, और जले हुए किले को देखकर अशोक को महसूस हुआ कि उसने श्मशान को जीता है और अब वह लाशों पर शासन करेगा।

6. प्रश्न: मगध लौटकर अशोक ने आचार्य उपगुप्त से पहला प्रश्न क्या पूछा?

उत्तर: उन्होंने पूछा, "वीरता और क्रूरता क्या है?"।

7. प्रश्न: आचार्य उपगुप्त के अनुसार, भावों के जगने का क्या चिह्न है?

उत्तर: इसके चिह्न हैं- उदार आत्मीयता का विस्तार, जिससे कोई पराया नहीं रहता, और दूसरों की तकलीफें देखकर सेवा के लिए स्वयं हाथ-पैर का चल पड़ना।

8. प्रश्न: अशोक ने अपने पुत्र-पुत्री को समाज-सेवा के लिए समर्पित करते हुए विरासत में क्या दिया?

उत्तर: उन्होंने विरासत के रूप में अपने 'कलेजे की कसक' और वह 'बेचैनी' दी, जिसकी ऊर्जा उन्हें निरंतर सक्रिय बनाए रखती थी।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने एक निष्ठुर पत्थर के भावों की प्रतिमा बनने की प्रक्रिया की तुलना अशोक के परिवर्तन से कैसे की है?

उत्तर: लेखक ने बताया कि जैसे एक पत्थर हथौड़ी और छैनी की चोट सहकर अपनी क्रूरता (नुकीलेपन) को त्यागता है और एक पूजनीय प्रतिमा बन जाता है, वैसे ही अशोक ने कलिंग युद्ध के आघात (बूढ़े के शब्द, विनाश का दृश्य) की चोट से अपने अंदर की क्रूरता और निष्ठुरता को त्यागा। यह एक अनोखी तपश्चर्या थी, जिसके बाद वे उत्पीड़क से मरहम लगाने वाले 'अशोक महान' बन गए।

2. प्रश्न: आचार्य उपगुप्त के अनुसार, बड़प्पन और महानता में क्या अंतर है? अशोक ने किसे चुना और कैसे?

उत्तर: आचार्य उपगुप्त के अनुसार, मन में वैभव पाने का लालच, सुविधा बढ़ाने की आतुरता और रौब गाँठने की ललक बड़प्पन है। इसके विपरीत, स्वयं का जीवन सामान्य नागरिक जैसा बनाना और अपनी सामर्थ्य को जनहित में लगाना महानता है। अशोक ने महानता को चुना। उन्होंने अपनी आवश्यकताओं को कम कर लिया और एक सामान्य गरीब व्यक्ति की तरह जीने लगे। उनकी कुल संपत्ति एक चीवर, एक सुई, एक छुरा, एक छलनी और एक तूम्बा मात्र रह गई थी।

3. प्रश्न: अशोक ने अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को जन-चेतना जगाने हेतु क्यों समर्पित किया? यह उनके परिवर्तन का चरम बिंदु क्यों माना जा सकता है?

उत्तर: अशोक स्वयं बूढ़े हो चले थे और वे चाहते थे कि सत्प्रवृत्तियों के संवर्धन का कार्य निरंतर चलता रहे। उन्होंने अपनी सबसे प्रिय संपत्ति, यानी अपनी संतान को समाज-देवता की अर्चना हेतु समर्पित कर दिया। यह उनके परिवर्तन का चरम बिंदु था क्योंकि यह उनके व्यक्तिगत मोह पर उनकी सामाजिक करुणा की छूड़ा छ विजय थी। उन्होंने अपनी संतान को धन-दौलत नहीं, बल्कि अपनी पीड़ा और बेचैनी विरासत में दी, जो निस्वार्थता की पराकाष्ठा है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "करुणा की दिव्यता और महत्वाकांक्षाओं की मलीनता, दोनों परस्पर विरोधी हैं।"—अशोक के जीवन के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध के माध्यम से इस कथन की विवेचना करें।

उत्तर: यह कथन अशोक के जीवन से पूरी तरह सिद्ध होता है।

◦ जीवन का पूर्वार्ध (महत्वाकांक्षा की मलीनता): 'चण्ड-अशोक' के रूप में उनका जीवन महत्वाकांक्षाओं से प्रेरित था। साम्राज्य विस्तार की इच्छा, सत्ता का मद और वीर कहलाने की डींग—यह सब मलीनता थी। इस महत्वाकांक्षा ने उन्हें भाइयों की हत्या करने और कलिंग में भीषण नरसंहार करने के लिए प्रेरित किया। इसका मार्ग शोषण, उत्पीड़न और विनाश था।

◦ जीवन का उत्तरार्ध (करुणा की दिव्यता): कलिंग युद्ध के बाद जब उनमें करुणा जागी, तो उनकी महत्वाकांक्षा समाप्त हो गई। करुणा की दिव्यता ने उन्हें जनहित में अपनी सारी सामर्थ्य लगाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने शांति और सद्भाव की भावधारा बहाई, व्यक्तिगत जीवन को अत्यंत सादा बना लिया और अपनी संतान तक को लोक-सेवा में अर्पित कर दिया। यह सिद्ध करता है कि जहाँ एक (महत्वाकांक्षा) दूसरों से छीनकर अपने लिए जमा करना सिखाती है, वहीं दूसरी (करुणा) अपना सब कुछ दूसरों के लिए लुटा देना सिखाती है। दोनों एक साथ नहीं रह सकतीं।

2. प्रश्न: अशोक का परिवर्तन केवल एक सम्राट का हृदय परिवर्तन नहीं था, बल्कि यह 'वीरता' की परिभाषा का भी परिवर्तन था। कैसे?

उत्तर: अशोक का परिवर्तन 'वीरता' की पूरी अवधारणा को बदलने वाला था। परिवर्तन से पहले, उनके लिए वीरता का अर्थ था—युद्ध जीतना, साम्राज्य का विस्तार करना और विरोधियों का दमन करना। यह शक्ति और संहार पर आधारित परिभाषा थी। कलिंग के बूढ़े ने इस परिभाषा को चुनौती देते हुए कहा कि यह वीरता नहीं, क्रूरता है। परिवर्तन के बाद, अशोक ने वीरता की एक नई परिभाषा गढ़ी और उसे अपने जीवन से सिद्ध किया। उनके लिए अब वीरता का अर्थ था —"त्रास से घिरे लोगों को बचाने, उनको सुख पहुँचाने हेतु अपने जीवन तक के मोह को तिलांजलि देकर जुट पड़ना"। यह परिभाषा करुणा, सेवा और आत्म-त्याग पर आधारित थी। उन्होंने अपने कर्तृत्व से बताया कि यथार्थ में वीरता, एक सम्वेदनशील जीवन है जो दूसरों की तकलीफों को दूर करने के लिए तत्पर रहता है। इस प्रकार, उन्होंने वीरता को संहार से सृजन की ओर मोड़ दिया।

अध्याय: सम्वेदना चैन से नहीं बैठने देती

यह अध्याय नाजरथ वासी ईसा (जीसस) के जीवन पर आधारित है, जो बताते हैं कि जब व्यक्ति के अंदर करुणा और सम्वेदना जाग जाती है, तो वह अभावों के बावजूद चुप नहीं बैठ सकता और दूसरों की पीड़ा दूर करने में जुट जाता है।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: ईसा के पास भौतिक रूप से क्या-क्या अभाव थे?

उत्तर: उनके पिता एक साधारण बढ़ई थे, माँ अशिक्षित थीं, उनका पालन-पोषण गड़रियों के बीच हुआ और उनके पास कोई बड़ी उपाधि नहीं थी।

2. प्रश्न: सारे अभावों के बावजूद ईसा के पास कौन-सी आंतरिक सम्पदा थी?

उत्तर: उनके पास करुणा की आंतरिक सम्पदा थी, जिसके कारण स्वार्थ-शून्यता, निष्पृहता और त्याग उनके जीवनसंगी बने।

3. प्रश्न: ईसा ने परेशान मछुआरों की समस्या का क्या समाधान सुझाया?

उत्तर: उन्होंने सभी को अपनी-अपनी रोटियाँ एक जगह जमा करने और मिल-बाँटकर खाने को कहा। उन्होंने समझाया कि रोटी में भूखे का हक है और पेट भरने पर भी इसे समेटकर रखना अपराध है।

4. प्रश्न: लोग ईसा के बारे में क्या कहते थे कि वे क्या करते हैं?

उत्तर: लोग कहते थे कि वे मुर्दों में प्राण फूँकते हैं।

5. प्रश्न: ईसा ने एक धनी युवक को स्वर्ग के राज्य की प्राप्ति के लिए क्या करने को कहा?

उत्तर: उन्होंने कहा कि अपनी जीवनोपयोगी वस्तुओं को छोड़कर शेष सारी सम्पत्ति बेच दो और उस धन से लोगों की विकलता दूर करने में जुट जाओ, तो स्वर्ग का राज्य प्रकट हो जाएगा।

6. प्रश्न: जेकस नाम का क्रूर व्यक्ति क्या काम करता था?

उत्तर: वह शराब घर चलाता था, गरीबों को शराब पीने के लिए प्रोत्साहित करता था, और फिर उनसे मारपीट कर बेरहमी से वसूली करता था। वह टैक्स वसूली का काम भी करता था।

7. प्रश्न: ईसा ने जेकस के अंदर की मानवीय-सम्वेदना को कैसे जगाया?

उत्तर: ईसा स्वयं जेकस के पास गए, उसे हृदय से लगाया और उसकी क्रूरता का इतनी कारुणिक रीति से वर्णन किया कि उसकी निष्ठुरता पिघल उठी। उन्होंने जेकस से कल्पना करने को कहा कि यदि वही दुरावस्थाएँ उसे और उसके परिवार को घेर लें तो कैसी अनुभूति होगी।

8. प्रश्न: ईसा ने 'होली घोस्ट' (पवित्र आत्मा) को क्या बताया है?

उत्तर: उन्होंने बताया कि 'होली घोस्ट' और कुछ नहीं, जाग्रत भाव-सम्वेदनाएँ हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: ईसा के जीवन से यह कैसे सिद्ध होता है कि "साधन-सुविधाएँ नहीं हैं, हम असहाय और असमर्थ हैं; ये सब बहाने हैं"?

उत्तर: ईसा का जीवन इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। उनके पास कोई धन, पद या उच्च शिक्षा जैसे सांसारिक साधन नहीं थे। इसके बावजूद, उनके अंदर करुणा की जो आत्मिक शक्ति थी, उसने उन्हें चैन से नहीं बैठने दिया। उन्होंने इसी आत्मबल से रोते हुआओं के आँसू पोछे, भूखों को भोजन का महत्व समझाया और जेकस जैसे क्रूर व्यक्ति का हृदय परिवर्तन कर दिया। यह दिखाता है कि यदि सम्वेदना जाग्रत हो, तो बाहरी साधनों का अभाव बहाना मात्र रह जाता है।

2. प्रश्न: "सुई के छेद से ऊँट निकल जाए, यह सम्भव है; पर धन बटोरने वाला स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं पा सकता।"—ईसा के इस कथन का क्या तात्पर्य है?

उत्तर: इस कथन का तात्पर्य यह है कि धन का संग्रह (लोभ और मोह) और आध्यात्मिक उन्नति (स्वर्ग का राज्य) दो परस्पर विरोधी चीजें हैं। धन का मोह व्यक्ति को स्वार्थी और निष्ठुर बनाता है, वह अपनी संपत्ति को दूसरों की पीड़ा दूर करने में नहीं लगा पाता, जैसा कि उस धनी युवक ने किया। जबकि स्वर्ग का राज्य करुणा, त्याग और सेवा से मिलता है। सुई के छेद से ऊँट का निकलना एक असंभव कार्य है। ईसा यह कहना चाहते हैं कि धन के प्रति मोह रखने वाले व्यक्ति के लिए आत्मिक शांति और दिव्यता प्राप्त करना लगभग उतना ही असंभव है।

3. प्रश्न: ईसा ने जेकस जैसे क्रूर व्यक्ति का हृदय परिवर्तन करने का जोखिम क्यों उठाया? उनका अंतिम लक्ष्य क्या था?

उत्तर: ईसा ने यह जोखिम इसलिए उठाया क्योंकि वे जानते थे कि एक व्यक्ति की निष्ठुरता सैकड़ों लोगों को तबाह कर रही है। उनका लक्ष्य केवल उन पीड़ितों को बचाना नहीं था, बल्कि समस्या की जड़, यानी जेकस की निष्ठुरता को ही समाप्त करना था। वे जानते थे कि यदि जेकस में सरसता का संचार कर दिया जाए, तो यह समस्या स्थायी रूप से हल हो जाएगी। उनका अंतिम लक्ष्य व्यक्ति के अंदर सोई हुई मानवीय सम्वेदना को जगाना था, क्योंकि यही एकमात्र उपाय है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, "भगवान जब कभी आता है, बेचैनी बनकर आता है।" इस कथन की व्याख्या ईसा और पुस्तक में वर्णित अन्य महापुरुषों के जीवन के संदर्भ में करें।

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि ईश्वर या दिव्यता का अवतरण हमारे जीवन में एक गहरी आंतरिक बेचैनी, एक तड़प के रूप में होता है। यह बेचैनी दूसरों की पीड़ा को देखकर उत्पन्न होती है और हमें उस पीड़ा को दूर करने के लिए सक्रिय होने को विवश करती है।

◦ ईसा: उनके अंदर मानवता की पीड़ा के लिए बेचैनी थी, जिसने उन्हें अभावों में भी सेवा करने के लिए प्रेरित किया।

◦ वेदव्यास: वे समाज की दुर्गति देखकर असह्य बेचैनी से ग्रस्त थे।

◦ मीरा: उनके मन में नारी जाति की पीड़ा के लिए बेचैनी थी, जिसने उन्हें महल छोड़ने पर विवश किया।

◦ अशोक: कलिंग के विनाश ने उनके अंदर बेचैनी पैदा की, जिसने उन्हें बदल दिया। यह बेचैनी ही वह दैवीय शक्ति है जो हमें स्वार्थ और निष्ठुरता के दायरे से बाहर निकालकर परमार्थ के लिए सक्रिय करती है। यह ईश्वर का हमारे अंतःकरण में प्रवेश है।

2. प्रश्न: ईसा द्वारा पहनाए गए 'क्रास' का क्या प्रतीकात्मक अर्थ है? यह उनके जीवन-दर्शन को कैसे सारांशित करता है?

उत्तर: क्रास का प्रतीकात्मक अर्थ गहरा है। ईसा के अनुसार, हृदय के ऊपर लटका क्रास इस बात का सूचक है कि:

1. हमारा हृदय आदर्शवादी भावों से भरा है: यह प्रेम, करुणा और सेवा जैसे दिव्य भावों का प्रतीक है।

2. हम इन आदर्शों के लिए मर-मिटने को तैयार हैं: यह केवल भावना नहीं, बल्कि उन आदर्शों के लिए सूली पर चढ़ने

जैसा कष्ट सहने के संकल्प का भी प्रतीक है। यह उनके पूरे जीवन-दर्शन को सारांशित करता है। उनका दर्शन केवल उपदेश देना नहीं था, बल्कि उन उपदेशों के लिए जीना और मरना था। उन्होंने स्वयं सूली पर चढ़कर यह सिद्ध किया कि मानवता के उद्धार के लिए अपने जीवन की आहुति देना ही सर्वोच्च धर्म है। क्रॉस, त्याग और प्रेम की इसी पराकाष्ठा का प्रतीक है।

अध्याय: जब अन्तः में लौ जली तो

यह अध्याय महात्मा गाँधी के जीवन की उस घटना का वर्णन करता है, जब एक गरीब युवती की दशा देखकर उनके अंतः में सम्वेदना की लौ जली और वे एक क्षण में 'कर्मवीर गाँधी' से 'महात्मा गाँधी' बन गए।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: दक्षिण भारत के दौरे पर गाँधी जी ने क्या देखा?

उत्तर: उन्होंने एक युवा लड़की को एक फटी, मैली-कुचैली धोती से जैसे-तैसे अपना शरीर ढके हुए देखा।

2. प्रश्न: गाँधी जी ने उस लड़की से क्या पूछा?

उत्तर: उन्होंने पूछा, "क्यों बहन, तुम इस धोती को धोती क्यों नहीं? इसके फटे हुए हिस्सों को सिल क्यों नहीं लेती?"।

3. प्रश्न: लड़की का जवाब सुनकर गाँधी जी को शर्म क्यों आई?

उत्तर: लड़की ने जवाब दिया कि उसके पास पहनने के लिए कोई दूसरी धोती नहीं है। यह सुनकर गाँधी जी को शर्म आई कि जनता की यह दशा है और वे स्वयं, जो जनता के सेवक कहलाते हैं, धोती-कुर्ता पहने हैं और एक जोड़ी अतिरिक्त भी रखे हुए हैं।

4. प्रश्न: गाँधी जी ने तत्काल क्या किया?

उत्तर: उन्होंने चुपचाप अपने झोले से दूसरी धोती निकाली और उस युवती को दे दी।

5. प्रश्न: गाँधी जी की चिरस्थायी पोशाक क्या बन गई और कैसे?

उत्तर: उन्होंने अपनी पहनी हुई धोती को फाड़कर दो टुकड़े किए; आधा पहनने के लिए और आधा ओढ़ने के लिए। यही उनकी चिरस्थायी पोशाक बन गई।

6. प्रश्न: साथियों के टोकने पर गाँधी जी ने 'बड़े' आदमी की क्या परिभाषा बताई?

उत्तर: उन्होंने कहा कि बड़े वे नहीं हैं जो सूट-बूट पहनते हैं, बल्कि बड़े वे हैं जिनका मन आमजन की समस्याओं से व्याकुल रहता है, जिनकी बुद्धि समाधान खोजती है और जिनका शरीर निरंतर सेवा में लगा रहता है।

7. प्रश्न: इंग्लैंड के सम्राट जॉर्ज पंचम से मिलते समय गाँधी जी ने अपनी पोशाक बदलने से क्यों इनकार कर दिया?

उत्तर: क्योंकि उनका मानस दृढ़ था और वे अपने आदर्शों पर कायम रहना चाहते थे। उन्होंने कहलाया कि यदि सम्राट को स्वीकार हो तो वे इसी पोशाक में मिलेंगे, अन्यथा नहीं।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, गाँधी जी एक क्षण में 'कर्मवीर' से 'महात्मा' कैसे बन गए? क्या यह सिर्फ पोशाक बदलने से हुआ?

उत्तर: नहीं, यह केवल पोशाक बदलने से नहीं हुआ। वे 'महात्मा' अन्तरंग की संरचना में उलट-फेर से बने। 'कर्मवीर' के रूप में वे कार्य तो कर रहे थे, लेकिन उस एक क्षण में जब उन्होंने उस लड़की की पीड़ा को गहराई से आत्मसात किया, उनकी सम्वेदना अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गई। उनका आधी धोती पहनने का निर्णय केवल एक बाहरी बदलाव नहीं था, बल्कि यह इस बात का प्रतीक था कि उन्होंने देश के सबसे गरीब व्यक्ति के साथ स्वयं को पूरी तरह एकाकार कर लिया है। यह **empathy** की उच्चतम अवस्था थी, जिसने उन्हें 'महात्मा' बनाया।

2. प्रश्न: "झूठे बड़प्पन और सच्ची महानता में से एक ही चुना जा सकता है।"—गाँधी जी के जीवन की घटनाओं से इस कथन को सिद्ध करें।

उत्तर: गाँधी जी के जीवन की घटनाएँ इस कथन को सिद्ध करती हैं।

◦ झूठा बड़प्पन: उनके साथियों के लिए बड़प्पन का अर्थ था अच्छी पोशाक पहनना ताकि वे 'बड़े-बड़े आदमियों' से मिल सकें। इंग्लैंड के सम्राट का निर्देश भी इसी झूठे बड़प्पन का प्रतीक था।

◦ सच्ची महानता: गाँधी जी ने सच्ची महानता को चुना। उनके लिए महानता का अर्थ था जन सामान्य की व्यथा समझना और उसके निवारण के लिए जुटना। उन्होंने सम्राट से मिलने के अवसर पर भी अपने आदर्श (गरीब जनता का प्रतिनिधित्व) को नहीं छोड़ा, जो दिखाता है कि उन्होंने झूठे बड़प्पन को पूरी तरह त्याग दिया था।

3. प्रश्न: सम्वेदना के बाद का चरण 'सक्रियता' क्यों है? रोगी की बेचैनी और भाव-चेतना से उपजी बेचैनी में क्या अंतर है?

उत्तर: सम्वेदना के बाद का चरण 'सक्रियता' है क्योंकि सच्ची सम्वेदना व्यक्ति को केवल महसूस करने पर नहीं रोकती, बल्कि उसे उस पीड़ा को दूर करने के लिए कर्म करने को विवश करती है।

◦ रोगी की बेचैनी: यह निष्क्रिय होती है। रोगी केवल चारपाई पर पड़ा कराहाता है, कुछ कर नहीं पाता। उसे दूसरों की सेवा की आवश्यकता होती है।

◦ भाव-चेतना से उपजी बेचैनी: यह सक्रिय होती है। यह व्यक्ति को चैन से बैठने नहीं देती और उसे समाधान के लिए क्रियाशील बनाती है। गाँधी जी के जीवन में यही सक्रियता पनपी, जिसने उन्हें एक साथ स्वराज्य, स्वावलम्बन, ग्राम-सुधार जैसे अनेक काम करने की ऊर्जा दी।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: गाँधी जी का आधी धोती पहनना केवल एक व्यक्तिगत त्याग नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली राजनीतिक और सामाजिक संदेश था। कैसे?

उत्तर: गाँधी जी का आधी धोती पहनना एक बहुआयामी और शक्तिशाली संदेश था:

◦ राजनीतिक संदेश: यह ब्रिटिश साम्राज्य के सामने भारत की गरीबी का एक जीवंत प्रदर्शन था। जब वे उसी पोशाक में सम्राट से मिले, तो उन्होंने बिना शब्दों के यह बता दिया कि जिस साम्राज्य पर सूरज नहीं डूबता, उसने भारत को क्या दिया है—नग्नता और भुखमरी। यह साम्राज्यवाद के शोषण का एक मौन लेकिन सबसे मुखर विरोध था।

◦ सामाजिक संदेश: यह भारत की आम जनता के साथ पूर्ण एकात्मता का संदेश था। उन्होंने यह दिखाया कि एक सच्चा नेता वह है जो अपने लोगों के दुःख-दर्द में बराबर का भागीदार हो, न कि उनसे अलग-थलग रहकर ऐश्वर्य का जीवन जिए। इसने उन्हें जनता के हृदय में स्थापित कर दिया और वे 'बापू' बन गए।

◦ आर्थिक संदेश: यह स्वावलम्बन और सादगी का प्रतीक था, जो उनके स्वदेशी आंदोलन का मूल आधार था। यह विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार और न्यूनतम आवश्यकताओं में जीवन जीने का एक व्यावहारिक उदाहरण था।

2. प्रश्न: लेखक ने टैगोर की कविता "एकला चलो रे" का उल्लेख गाँधी जी के संदर्भ में क्यों किया है? यह गाँधी जी के चरित्र के किस पहलू पर प्रकाश डालता है?

उत्तर: टैगोर की कविता का अर्थ है कि यदि घोर अँधेरी और तूफानी रात में कोई तुम्हारा साथ न दे, तो अपने ही हृदय को जलाकर उसके प्रकाश में अकेले ही अपने पथ पर चलते रहो। लेखक ने इसका उल्लेख गाँधी जी के संदर्भ में इसलिए किया क्योंकि गाँधी जी ने कई बार ऐसे निर्णय लिए जब वे बिल्कुल अकेले थे और उनके करीबी साथी भी उनके विचारों से

सहमत नहीं थे (जैसे आधी धोती पहनने का निर्णय)। यह गाँधी जी के चरित्र के निम्नलिखित पहलुओं पर प्रकाश डालता है:

- **अडिग निश्चय:** वे अपने सिद्धांतों और अंतरात्मा की आवाज पर अडिग रहते थे, भले ही पूरी दुनिया उनके खिलाफ क्यों न हो।
- **आत्मबल:** उनकी शक्ति बाहरी समर्थन पर नहीं, बल्कि उनकी आंतरिक नैतिक और आत्मिक शक्ति पर आधारित थी।
- **नेतृत्व क्षमता:** एक सच्चा नेता वह होता है जो सही रास्ते पर अकेले चलने का साहस रखता है, यह जानते हुए कि अंततः लोग उसके पीछे आएंगे। गाँधी जी का जीवन इसी का प्रमाण है।

अध्याय: सम्वेदना की दिव्य दृष्टि

यह अध्याय ठक्कर बापा (अमृत लाल ठक्कर) के जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करता है, जो बताते हैं कि सच्ची सम्वेदना व्यक्ति को दिव्य दृष्टि प्रदान करती है, जिससे वह उस पीड़ा को भी देख पाता है जिसे आम आँखें नहीं देख पातीं।

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: ठक्कर बापा नौकरी छोड़ने से पहले क्या काम करते थे?

उत्तर: वे बड़वाण में मुख्य इंजीनियर थे।

2. प्रश्न: किस घटना ने इंजीनियर अमृत लाल ठक्कर के जीवन को बदल दिया?

उत्तर: एक हरिजन सफाई कर्मचारी से हुई बातचीत ने उनके जीवन को बदल दिया। उस हरिजन ने कहा था कि "शायद आप हमारी स्थिति में रहते, तो समझ पाते," जिसने उनके मर्म को भेद दिया।

3. प्रश्न: नौकरी छोड़ने के बाद ठक्कर बापा कहाँ रहने लगे और क्या करने लगे?

उत्तर: वे हरिजनों की बस्ती में एक टूटी-सी झोपड़ी में रहने लगे। वे खुद हरिजनों के यहाँ सफाई करते, उनके बच्चों को पढ़ाते और प्रौढ़ों को जीवनोपयोगी बातें सुनाते।

4. प्रश्न: अमृतलाल ठक्कर को "ठक्कर बापा" क्यों कहा जाने लगा?

उत्तर: हरिजनों की सेवा में पूर्णरूपेण निरत हो जाने के कारण वे सभी के लिए "ठक्कर बापा" हो गए थे।

5. प्रश्न: महात्मा गाँधी ने ठक्कर बापा के बारे में क्या कहा?

उत्तर: गाँधी जी ने कहा, "काश मैं भी बापा जैसे सम्वेदनाओं की पूँजी जुटा पाता, तो अपने को धन्य मानता"।

6. प्रश्न: भारत के 'पेरिस' कहे जाने वाले जयपुर में बापा को क्या दिखाई दिया?

उत्तर: जहाँ लोगों को जयपुर का वैभव दिखता था, वहीं बापा को वहाँ के भंगियों की नारकीय दशा दिखाई दी, जिसे अब तक किसी ने नहीं देखा था।

7. प्रश्न: बापा के अनुसार, उनका 'हरि' कहाँ रहता है?

उत्तर: बापा के अनुसार, उनका हरि दीन-दलितों की कुटियों में रहता है।

8. प्रश्न: वियोगी हरि के पूछने पर बापा ने 'नन्द कुमार' का दर्शन कहाँ करने की बात कही?

उत्तर: उन्होंने कहा कि नन्दकुमार का दर्शन तो उन्होंने आदिवासियों एवं हरिजनों के गोकुल में कितने ही रूपों में किया है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "कोरी वाणी ने कब किसका कल्याण किया है?"—ठक्कर बापा के जीवन में यह बोध कब और कैसे हुआ?

उत्तर: यह बोध उन्हें उस हरिजन कर्मचारी से बात करते हुए हुआ, जिसे उन्होंने साफ-सुथरे रहने की सलाह दी थी। जब उस हरिजन ने कहा कि उनकी स्थिति में रहकर ही उनकी कठिनाइयाँ समझी जा सकती हैं, तो बापा को एहसास हुआ कि केवल उपदेश देना व्यर्थ है। सच्चा उपदेश आचरण से दिया जाता है। उन्हें समझ आया कि उपदेश को सीखने वाले के

साथ अनुभूति के स्तर पर एक होना पड़ता है। इसी बोध के बाद उन्होंने अपनी नौकरी और सुख-सुविधा छोड़कर स्वयं उस स्थिति में जीना शुरू कर दिया।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, 'सम्वेदनशील को ही सही दृष्टि मिलती है।' जयपुर की घटना से यह कैसे सिद्ध होता है?

उत्तर: यह जयपुर की घटना से सिद्ध होता है क्योंकि जयपुर, जिसे 'भारत का पेरिस' कहा जाता है, अपने वैभव के लिए प्रसिद्ध था। हजारों लोग वहाँ आते थे और उसकी सुंदरता देखते थे, पर किसी को भी वहाँ के भंगियों की नारकीय दशा नहीं दिखी। केवल ठक्कर बापा, जिनकी सम्वेदना जाग्रत थी, उन्हें ही वह पीड़ा दिखाई दी। उनकी आँखों ने वह देखा जो दूसरों की आँखें नहीं देख सकतीं। यह दिखाता है कि सच्ची दृष्टि भौतिक आँखों से नहीं, बल्कि सम्वेदना से भरे हृदय से मिलती है। यही 'दिव्य दृष्टि' है।

3. प्रश्न: ठक्कर बापा का 'हरिजनों के हरिजन' हो जाने का क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि उन्होंने केवल दूर से हरिजनों की सेवा नहीं की, बल्कि वे स्वयं उनके जैसा जीवन जीने लगे। उन्होंने उनकी पीड़ा को केवल समझा नहीं, बल्कि उसे भोगा भी। वे उनके घरों में सफाई करने लगे, जो उस समय हरिजनों का काम माना जाता था। इस प्रकार, उन्होंने स्वयं को उन दीन-हीनों की सेवा में इतना तद्रूप कर लिया कि वे उन्हीं में से एक हो गए। यह सेवा की वह पराकाष्ठा है जहाँ सेवक और सेव्य का भेद मिट जाता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: पुस्तक के अंतिम अनुच्छेद में लेखक ने "भटकन से बचने" के लिए "स्वयं को भाव-सम्वेदनाओं के राज्य में रहने के योग्य" बनाने का आह्वान क्यों किया है? इसका भविष्य के संदर्भ में क्या महत्व है?

उत्तर: लेखक ने यह आह्वान इसलिए किया है क्योंकि उनके अनुसार, भविष्य का युग (दिव्य लोक) भाव-सम्वेदना पर आधारित होगा। महाकाल का निश्चय है कि धरती का स्वर्गीकरण होगा। उस आने वाले युग में वही व्यक्ति सामंजस्य बिठा पाएगा जिसकी सम्वेदना जाग्रत होगी। जिनकी सम्वेदना जाग्रत नहीं होगी, वे उस नए युग की परिस्थितियों को समझ नहीं पाएंगे और अन्धों की तरह भटकेंगे, क्योंकि उन्हें दिव्य दृष्टि प्राप्त नहीं होगी। अतः, भविष्य में सुखी और सार्थक जीवन जीने के लिए अभी से स्वयं को सम्वेदनशील बनाना एक अनिवार्य तैयारी है। यह केवल एक नैतिक उपदेश नहीं, बल्कि भविष्य के लिए एक व्यावहारिक आवश्यकता है।

2. प्रश्न: इस पूरी पुस्तक में 'आत्मा का जागरण', 'भाव-सम्वेदना का जागरण', 'करुणा', और 'दिव्य दृष्टि' जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है। ठक्कर बापा के जीवन का उदाहरण देते हुए इन सभी अवधारणाओं के बीच के संबंध को स्पष्ट करें।

उत्तर: ये सभी अवधारणाएँ एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई हैं और एक क्रमिक विकास को दर्शाती हैं, जो ठक्कर बापा के जीवन में स्पष्ट दिखता है:

1. आत्मा/भाव-सम्वेदना का जागरण: यह पहला चरण है। ठक्कर बापा के जीवन में यह जागरण उस हरिजन की बातों से हुआ, जिसने उनके अंतर्मन को झकझोर दिया। यह वह क्षण था जब उनकी सोई हुई आत्मा या सम्वेदना जागी।

2. करुणा का सक्रिय रूप: आत्मा के जागते ही करुणा उत्पन्न होती है, जो केवल एक भावना नहीं, बल्कि एक सक्रिय शक्ति है। यह करुणा ही बापा को इंजीनियर की आरामदायक जिंदगी छोड़कर हरिजनों की बस्ती में ले आई और उन्हें सेवा में लगा दिया।

3. दिव्य दृष्टि की प्राप्ति: जब व्यक्ति करुणा से प्रेरित होकर निरंतर सेवा में लगा रहता है, तो उसे दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है। यह वह दृष्टि है जो स्थूल आँखों से परे जाकर दूसरों की छिपी हुई पीड़ा को देख लेती है। इसी दिव्य दृष्टि के कारण बापा को जयपुर के वैभव के पीछे छिपी भंगियों की नारकीय दशा दिखाई दी, जो किसी और को नहीं दिखी थी। संक्षेप

में, आत्मा का जागरण बीज है, करुणा उसका अंकुरण और सक्रिय रूप है, और दिव्य दृष्टि वह पुष्प है जो इस करुणा और सेवा के वृक्ष पर खिलता है। यह एक आध्यात्मिक यात्रा है जिसका हर चरण पिछले चरण से organically जुड़ा हुआ है।

पुस्तक में परिभाषित शब्द और अवधारणाएँ

- मनीषी - वह जो भटकी मानवता को राह सुझाने हेतु प्रयत्नरत रहता है, हाथ-पर-हाथ धरे नहीं बैठता, और स्वयं की बौद्धिकता के अहं से ग्रस्त नहीं होता।
- कर्तव्यनिष्ठा - इसका दूसरा नाम मनुष्यता है।
- भाव-सम्वेदनाओं का जागरण - इसे दूसरे शब्दों में सोई हुई आत्मा का जागरण भी कह सकते हैं।
- मनुष्य की प्रकृति (प्रकृति) - मनुष्य के सारे क्रियाकलाप अहं-जन्य हैं और बुद्धि-मन-इंद्रियाँ सब इसी के गुलाम हैं। मानवीय सत्ता का केन्द्र आत्मा है, जो सरसता, सक्रियता और उन्नत भावों का अंश है।
- भाव - ये एक साथ कोमल और कठोर दोनों होते हैं। सत्प्रवृत्तियों के लिए पुष्प जैसे कोमल और दुष्प्रवृत्तियों के लिए वज्र की तरह कठोर।
- संजीवनी (मूर्छित मानवता के लिए) - यह भाव-सम्वेदना है।
- प्रतिभा - यह शरीर और मन की चरम सक्रियता है। भाव-श्रद्धा से न जुड़ पाने पर यह अहंकार की चाकरी करती है और उन्नत भावों से जुड़ने पर यह व्यक्ति को "सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय" हेतु क्रियाशील होने के लिए विवश करती है।
- जीवित मनुष्य (भाव-चेतना के साथ) - वह जो समर्थ और सुन्दर बनता है तथा पीड़ा और पतन के निवारण के लिए दौड़ पड़ता है।
- जीवित मनुष्य (भाव-चेतना के बिना) - यह एक लाश की तरह है, जो स्वयं सड़ता है और वातावरण को घिनौना बनाता है। इसकी पहचान अकर्मण्यता और निष्ठुरता है।
- मनुष्य - जो मनुष्य के लिए मरे।
- भूत-पलीत - जो सारा जीवन ईंट-पत्थर, कंकड़, कागज बटोरते हुए मरते हैं।
- करुणा के उभरने की पहचान - अपनी आवश्यकताएँ बिसर जाना और दूसरों की जरूरतें याद आना।
- भक्ति - संसार परमात्मा का विराट् स्वरूप है। हर किसी के अन्दर आत्मा के रूप में वह विद्यमान है। इसी आत्म चेतना को जगाना और उस भाव-धन को अर्पित करना ही भक्ति है।
- समर्पण की क्रिया - जब आत्मचेतना की सघन भावनाएँ, मन की सारी सोच और शरीर की हर हरकत विश्व-उद्यान को सुखद-सुन्दर बनाने के लिए मचल उठे, तब समझना चाहिए कि समर्पण की क्रिया शुरू हुई।
- भक्त - वह, जिसके लिए जन-जन का दर्द उसका अपना दर्द हो।
- विभक्त - वह जो भक्त नहीं है, अर्थात् भगवान से सर्वथा अलग-थलग है।
- शांति - यह क्रियाशीलता की चरम-अवस्था है। जैसे लड्डू जब पूरी तेजी के साथ घूमता है, तब शान्त-स्थिर दिखता है।
- वीरता - सताए हुआ के कष्ट हरने, उत्पीड़ितों के उत्पीड़न को दूर करने का नाम वीरता है। त्रास से घिरे लोगों को बचाने, उनको सुख पहुँचाने हेतु अपने जीवन तक के मोह को तिलांजलि देकर जुट पड़ने का नाम वीरता है। यथार्थ में वीरता, वह सम्वेदनशील जीवन है, जो दूसरों की तकलीफों को दूर करने के लिए तत्पर होता है।
- क्रूरता - जो हँसती-खेलती जिन्दगियाँ बरबाद करे, वह क्रूर है। बसी हुई बस्तियों को उजाड़ देना, खड़ी फसल में आग लगा देना, शोषण, उत्पीड़न का चक्र चलाना, इसी का नाम क्रूरता है।
- भावों के जगने की पहचान - उदार आत्मीयता और अपनत्व का विस्तार होना, जिससे कोई पराया नहीं रह जाता। दूसरों की तकलीफें देखकर स्वयं निष्क्रिय न रह पाना और सेवा में जुट जाना। स्वयं के जीवन का स्तर समाज के सामान्य नागरिक जैसा होना।
- बड़े आदमी (सच्चे) - वे, जिनका मन सर्व-सामान्य की समस्याओं से व्याकुल रहता है, जिनकी बुद्धि इन समस्याओं के

नए प्रभावकारी समाधान खोजती है और जिनके शरीर ने निरंतर सेवा करने का व्रत ले लिया है।

- रामराज्य - ऐसे समाज की स्थापना, जिसमें मनुष्य की पहचान उसकी भाव-चेतना के आधार पर हो।
- होली घोट (पवित्र आत्मा) - यह और कुछ नहीं, जाग्रत भाव-सम्वेदनाएँ हैं।
- प्रवेश निषेध की तख्ती (ईश्वर के लिए) - यह निष्ठुरता है, जिसके हटते ही जीवन स्वर्गीय आलोक से भर जाता है।
- सम्वेदनशील की पहचान - वह जो भी कहता है, आचरण से कहता है।